आचार्य तुलसी स्मारक श्रद्धार्पण अनुष्ठान पर आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा

''सम्पूर्ण जैन विश्व भारती ही स्मारक है''

लाडनूं, 6 अक्टूबर।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ, युवाचार्यश्री महाश्रमण, साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा के सान्निध्य में जैन वि-व भारती में बने आचार्य तुलसी स्मारक पर श्रद्धार्पण अनुष्ठान समारोह अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल द्वारा आयोजित किया गया। जिसमें महिला मण्डल के राष्ट्रीय अधिवेशन में पहुंचे देशभर से महिलाओं समेत अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

समारोह को संबोधित करते हुए आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि कुछ महापुरुशों के स्मारक तो मनुष्य के मस्तिश्क में विद्यमान होते हैं। किन्तु भौतिक जगत में भी प्रतीकात्मक रूप से स्मृति और आराधना का एक स्थान आवश्यक है। मूल रूप में सम्पूर्ण जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय ही स्मारक है परन्तु इस स्मारक के द्वारा एक तरह से बिंदू खोजने का काम हुआ है, जिस तरह एक डॉक्टर पूरे शरीर में दवा का संचार करने के लिए बिंदू खोजता है इसी तरह स्मारक का निर्माण उस बिंदू की खोज है जिसके माध्यम से एवं जैन विश्व भारती के योग से सम्पूर्ण विश्व में आचार्य तुलसी के कर्तृत्व का प्रसार हो सकेगा।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि स्मारक का भी महत्त्व होता है। भगवान ऋषभ व गणधरों के स्मारक के आकार का वर्णन आगमों में मिलता है। यह एक प्रतीक होता है, इससे यहां आने वाले लोगों के रग-रग में आचार्य तुलसी के अनुदानों और कर्तृत्व का संचार हो सके इस पर ध्यान देना जरूरी है।

आचार्यवर ने फरमाया कि लाडनूं आचार्य तुलसी की जन्मभूमि है और यहां उनके कर्तृत्व को देखने का एक बड़ा संस्थान है इसलिए उसकी स्मृति हो यह जरूरी है। जिसकी कल्पना की गई उस कल्पना को महिला मण्डल ने निष्ठा के साथ पूरा किया है। हमें यह सोचना है कि यह स्मारक प्रेरक बने। यह जैन विश्व भारती और जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के माध्यम से आचार्य तुलसी के अवदानों की सौरभ पूरे विश्व तक पहुंच जाए, ऐसी प्रेरणा की आवश्यकता है।

युवाचार्यवर ने फरमाया कि किसी आराधना का मूल स्मारक तो चेतना में हो सकता है लेकिन यह भौतिक स्थान भी कुछ निमित बन सकते हैं। नवनिर्मित यह स्मारक आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में श्रद्धार्पण का प्रमुख स्थान सिद्ध होगा।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा ने कहा कि आचार्य तुलसी का सच्चा स्मारक उनके विचार दर्शन में है।

इस अवसर पर आचार्यश्री महाप्रज्ञ, युवाचार्यश्री महाश्रमण, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा सहित सभी साधु-साध्वियों एवं श्रावक-श्राविकाओं ने मंत्रानुष्ठान किया। राष्ट्रीय अध्यक्षा सौभाग बैद, महामंत्री वीणा बैद ने

सम्पूर्ण महिला समाज की तरफ से श्रद्धा अर्पित की। वरिष्ठ श्रावक श्री कन्हैयालाल छाजेड़ ने जैन विश्व भारती की तरफ से महिला मण्डल को साधुवाद दिया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सूरज बरड़िया ने किया।

श्रद्धार्पण अनुष्ठान के पश्चात जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में आयोजित धर्म सभा को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि आज उल्हास और उमंग का वातावरण है जिन लोगों ने इस स्मारक को बनाने का प्रयत्न किया है और जिन लोगों ने इसमें योगदान दिया उनके मन में भी उल्हास है और देखने वालों के मन में भी उल्हास है, इस उल्हास के वातावरण में भविष्य पर ध्यान दें तो यह स्मारक आराधना और साधना का केन्द्र बने। यह स्थल जहां अपने आपको समझने और आचार्य तुलसी के कर्तृत्व का स्मरण कराने वाला स्मारक बने।

आचार्यवर ने आचार्य तुलसी के जीवंत कर्तृत्व का उल्लेख करते हुए फरमाया कि आकार में प्राण भरना विशेष बात होती है जब तक प्राण प्रतिष्ठा नहीं होती तब तक मूर्तिपूजक वाले पूजा नहीं करते इसी तरह यह मानना चाहिए कि आकार बन गया है अभी प्राण प्रतिष्ठा बाकी है। एक क्षेत्र का भी विशेष प्रभाव होता है, नकारात्मक विचार होते हैं वे भी छूट जाते हैं तो यह स्थल हजारों-लाखों लोगों के लिए आत्म प्रेरित करने वाला बने।

अखिल भारतीय महिला मण्डल का 34वां वार्षिक महिला अधिवेशन

अखिल भारतीय महिला मण्डल के 34वें वार्षिक महिला अधिवेशन पर अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्षा सौभाग बैद ने अपने दो वर्षिय कार्यकाल की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, जैन विश्व भारती की कल्पना व नारी समाज को आगे लाने के लिए आचार्य तुलसी का विशेष योगदान रहा है। आज इतिहास को देखें तो महिलाएं हर क्षेत्र में आगे आ रही है। उन्होंने अपने अध्यक्षीय कार्यकाल को सफल बनाने के लिए सभी शाखा मण्डलों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

समारोह में विभिन्न स्तरों पर श्रेष्ठतम कार्यों के लिए प्रथम रहने वाली तेरापंथ महिला मण्डल की शाखाओं में चित्तौड़गढ़, श्रीडूंगरगढ़, इन्दौर व मुंबई शाखाओं के पदाधिकारियों को यह सम्मान दिया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं स्मारक निर्माण में विशेष योगदान देने वाले श्री जुगराज नाहर के अलावा श्री माखनलाल गोयल, श्री कन्हैयालाल पटावरी, श्रीमती विमलादेवी दुगड़, श्री चैनरूप चिण्डालिया, श्री पन्नालाल बैद, श्री डालमचन्द सुराणा आदि को स्मृति चिन्ह व शाल भेंट कर सम्मानित किया।

समारोह में समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा सायर बैंगानी ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सूरज बरड़िया, श्रीमती वीणा बैद ने किया। कार्यक्रम का प्रारंभ तेरापंथ महिला मण्डल के समूह गीत से हुआ।

वीतराग वंदना पुस्तक का विमोचन

कार्यक्रम में मुमुक्षु डॉ. शांता जैन द्वारा लिखित पुस्तक 'वीतराग वंदना' का लोकार्पण आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा किया गया। पुस्तक की विषय वस्तु पर प्रकाश डालते हुए प्रथम प्रति आचार्यवर को समर्पित की।

एबीटीएमएम वेबसाइट का लोकार्पण

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की नई वेबसाइट *ूण्ंइजउउण्वतह* (डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट एबीटीएमएम डॉट ओरजी) का लोकार्पण किया गया। श्री नरेश खत्री ने वेबसाइट की डेमो प्रोजेक्ट के माध्यम से दिखाकर वेबसाइट की जानकारी दी। जिसमें तेरापंथ महिला मण्डल व तेरापंथ कन्यामण्डल आदि के विशेष कार्यक्रमों की जानकारी उपलब्ध हो सकेगी।